International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

बेनेदिक्ता बड़ा
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. आशीष कुमार बाजपेयी
प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोध पत्र में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 छात्राओं (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण) का चयन कर उन पर 'किशोरावस्था समस्या मापनी' का प्रशासन किया गया तथा किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक, सामाजिक एवं व्यावसायिक समस्याओं का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अतंर पाया गया ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में, शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक संवेगात्मक समस्याएं पाई गयीं जबकि शहरी क्षेत्र की छात्राओं में ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक व्यावसायिक समस्याएं पाई गयीं। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की सामाजिक समस्याओं में सार्थक अतंर नहीं पाया गया।

किशोरावस्था को जीवन की स्वर्णिम अवस्था कहा जाता है। यद्यपि इस अवस्था का कोई निश्चित समय नहीं बताया जा सकता है, क्योंकि विभिन्न व्यक्तियों का तारूण्य काल अलग–अलग आयु से प्रारम्भ होने के कारण उनकी किशोरावस्था का समय भी तभी से माना जाना चाहिए, परन्तु समान्यतः 12 से 18 वर्ष की अवस्था किशोरावस्था कहलाती है। इस काल की अनेक विशेषताएँ व समस्याएं होती हैं तथा इस अवस्था में तीव्र परिवर्तन आते हैं। परन्तु यह परिवर्तन अचानक न होकर क्रमशः होते हैं। **किंग** के अनुसार, "जिस तरह एक ऋतु का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आगमन दूसरी ऋतु के बाद होता है लेकिन पहली ऋतु में दूसरी ऋतु के आने के लक्षण प्रतीत होने लगते हैं उसी तरह बालक की अवस्थाएँ भी एक दूसरे से संबंधित हैं।'' अर्थात बाल्यावस्था की समाप्ति के उपरान्त किशोरावस्था प्रारम्भ होती है तथा प्रौढ़ अवस्था के प्रारम्भ होने तक चलती है।

किशोरावस्था मानव विकास की सभी अवस्थाओं में एक महत्वपुर्ण अवस्था है जो बचपन तथा प्रौढ़ अवस्था के मध्य होती है। किशोरावस्था का समय बचपन की समाप्ति से शुरू होता है और प्रौढ़ अवस्था में लीन हो जाता है। इस काल में परिवर्तन की क्रांतिकारी प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इस अवस्था में छात्रों में तात्कालिक तथा दीर्घकालिक दोनों ही प्रभाव देखने को मिलते हैं। इस अवस्था में किशोरों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनका समाधान करने का वह संपूर्ण प्रयास करते हैं परंतु प्रायः उन्हें असफलता ही हाथ लगती है। समस्याग्रस्त होने के कारण उनमें सांवेगिक अस्थिरता, कुंठा, क्रोध, आक्रामकता, तनाव एवं मादक पदार्थो के सेवन जैसे विकार उत्पन्न हो जाते हैं। यदि किशोरों की समस्याओं का उचित समाधान हो जाये तो परिवार, विद्यालय व समाज में उनका समायोजन अच्छी तरह होगा एवं वे योग्य नागरिक बन सकेगें। प्रस्तुत शोधकार्य में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं **की** समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना अत्यंत सामयिक प्रतीत होता है, क्योंकि वातावरण ही व्यक्तित्व का निर्धारक होता है। यदि वातावरण न केवल भौतिक सुविधाओं को प्रदान करने वाला हों अपितु मनो–सामाजिक दृष्टिकोण से पोषण करने वाला हो, तो ऐसा वातावरण किशोरियों को समस्याग्रस्त होने से बचाकर, उनके उचित समायोजन में सहायता कर सकता है। यदि सकारात्मक पारिवारिक व विद्यालयीन वातावरण किशोरियों के अच्छे समायोजन में सहायक होता है तो, किशोरियों के रूप में भविष्य के अच्छे नागरिक मिलेंगे, जो समाज तथा देश को विकासशील देश से विकसित देश बनाने में सहायक होंगे।

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **कुमार, सुकेश (2000)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण बाल श्रामिकों के सामाजिक व

समग्र समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि सांवेगिक व शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। **देवेंद्र कुमार तथा सिंह (2005)** ने अपने अध्ययन में पाया कि रहवास की प्रकृति किशोर एवं किशोरियों के समायेजन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। शहरी किशोर व किशोरियों का गृह, संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन ग्रामीण किशोर एवं किशोरियों की तुलना में उच्च पाया गया। **राजू, एम.बी.आर. एवं ख्वाजा, टी. (2007)** ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन समस्या का परीक्षण किय इस अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में ज्ञात हुआ कि प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी का समायोजन, कक्षा वातावरण, शिक्षण, माध्यम, प्रबंधन पालकों की शिक्षा पर निर्भर करता है, साथ ही उनका समायोजन भग्नाशा द्वारा सार्थक रूप से प्रभावित पाया गया। **भारती, ए.के. (2010)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन तथा समायोजन के घटकों में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण विद्यार्थियों में स्वास्थ्य, गृह, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक एवं समग्र समायोजन शहरी विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया। **साठे, वी.यू. एवं अंसारी, एफ. (2012)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं समायोजन के विभिन्न घटकों गृह तथा परिवार, सामाजिक, व्यक्तिगत तथा संवेगात्मक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह संबंध पाया गया। **शर्मा, प्रज्ञा; श्रीवास्तव, रेनू एवं बाजपेयी, आशीष (2014)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि गृह, सामाजिक, संवेगात्मक, विद्यालयीन व समग्र समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। **कुमार, जुगनू (2018)** ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं के मध्य संवेगात्मक/सामाजिक/ व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याएँ, शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गयीं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की सामाजिक समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की व्यावसायिक समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक समस्या में सार्थक अतंर नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की सामाजिक समस्या में सार्थक अतंर नहीं है।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की व्यावसायिक समस्या में सार्थक अतंर नहीं है।

उपकरण :–

किशोरावस्था समस्या मापनी – आशीष बाजपेयी, हरगोविंद शुक्ला एवं अमित गुप्ता

विधि :–

सर्वप्रथम होशंगाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गई तथा इस सूची में से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के अंतर्गत लॉटरी विधि द्वारा दो शहरी क्षेत्र एवं दो ग्रामीण क्षेत्र मे स्थित विद्यालयों का चयन किया गया तथा इन विद्यालयों की कक्षा नवमीं व दसवीं में अध्ययनरत् 100 छात्राओं (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर सामूहिक रूप से 'किशोरावस्था समस्या मापनी' का प्रशासन किया गया एवं किशोरावस्था समस्या मापनी के तीनों क्षेत्रों का अलग अलग फलांकन किया गया। प्राप्तांकों के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आधार पर मास्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

परिकल्पना – 1 : शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक समस्या में सार्थक अतंर नहीं है।

सारणी क्रमांक 01

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक समस्या संबंधी तुलनात्मक परिणाम

निवास क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
शहरी	50	10.26	3.49	2.18	< 0.05
ग्रामीण	50	11.68	2.97		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 1.98

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक समस्या के मध्यमान क्रमशः 10.26 व 11.68 पाये गये जिनके मध्य 1.42 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.18 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक समस्या में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में, शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक संवेगात्मक समस्याएं पाई गयीं, अर्थात् छात्राओं की संवेगात्मक समस्या पर निवास क्षेत्र (शहरी एवं ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव पाया गया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गयी ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक समस्या में सार्थक अतंर नहीं है।'' उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना – 2 : शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की सामाजिक समस्या में सार्थक अतंर नहीं है।

सारणी क्रमांक 02

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की सामाजिक समस्या संबंधी तुलनात्मक परिणाम

निवास क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
शहरी	50	7.58	2.73	0.92	> 0.05
ग्रामीण	50	8.06	2.45		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 1.98

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की सामाजिक समस्या के मध्यमान क्रमशः 7.58 व 8.06 पाये गये जिनके मध्य 0.48 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.92 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षाकृत कम है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की सामाजिक समस्या में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् छात्राओं की सामाजिक समस्या पर निवास क्षेत्र (शहरी एवं ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गयी ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किशोरावस्था की छात्राओं की सामाजिक समस्या में सार्थक अतंर नहीं है।'' उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना – 3 : शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की व्यावसायिक समस्या में सार्थक अतंर नहीं है।

सारणी क्रमांक 03

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की व्यावसायिक समस्या संबंधी तुलनात्मक परिणाम

निवास क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
शहरी	50	7.18	2.23	2.80	< 0.01
ग्रामीण	50	5.92	2.31		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की व्यावसायिक समस्या के मध्यमान क्रमशः 7.18 व 5.92 पाये गये जिनके मध्य 1.26 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.80 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.63 की अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की व्यावसायिक समस्या में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं में ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक व्यावसायिक समस्याएं पाई गयीं, अर्थात् छात्राओं की व्यावसायिक समस्या पर निवास क्षेत्र (शहरी एवं ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव पाया गया।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गयी ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की

किशोरावस्था की छात्राओं की व्यावसायिक समस्या में सार्थक अतंर नहीं है।'' उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक समस्या में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में, शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक संवेगात्मक समस्याएं पाई गयीं, अर्थात् छात्राओं की संवेगात्मक समस्या पर निवास क्षेत्र (शहरी एवं ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव पाया गया।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की सामाजिक समस्या में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् छात्राओं की सामाजिक समस्या पर निवास क्षेत्र (शहरी एवं ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की व्यावसायिक समस्या में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं में ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक व्यावसायिक समस्याएं पाई गयीं, अर्थात् छात्राओं की व्यावसायिक समस्या पर निवास क्षेत्र (शहरी एवं ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

1. अस्थाना, मधु एवं वर्मा, किरणबाला (1996) : **व्यक्तित्व मनोविज्ञान,** मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 86
2. अस्थाना, विपिन (1999) : **मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मूल्यांकन,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीनतम् संस्करण
3. भाई योगेन्द्रजीत : **विकासात्मक मनोविज्ञान,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, चतुर्थ संस्करण
4. भार्गव, महेश (1997) : **आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन,** हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन, कचहरी घाट, आगरा, ग्यारहवां संस्करण

5. भार्गव, तृप्ति एवं भार्गव, विवेक (1991) : **मानव व्यवहार का मनोविज्ञान,** हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन, कचहरी घाट, आगरा, प्रथम संस्करण
6. भार्गव, ऊषा (1993) : **किशोर मनोविज्ञान,** राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण
7. भटनागर, ए.बी. (2003) : **शिक्षा मनोविज्ञान,** सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इन्टर कॉलेज, मेरठ, चतुर्थ संस्करण
8. भटनागर, सुरेश (2007) : **शिक्षा मनोविज्ञान,** आर. लाल बुक डिपो, निकट गर्वनमेन्ट कॉलेज, मेरठ, नवीनतम संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 190
9. **कुमार, सुकेश (2000)** ''विस्थापित बाल श्रमिक विद्यालयों में अध्यनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन'', *भारतीय आधुनिक शिक्षा जुलाई 200, पेज नं. 59–62*
10. **कुमार, जुगनू (2018)** ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन'', *इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमन रिसोर्स एण्ड सोशल साइंस, वॉल्युम 5, इश्यु 1, जनवरी 2018, पेज नम्बर 709–712*
11. **शर्मा, प्रज्ञा; श्रीवास्तव, रेनू एवं बाजपेयी, आशीष (2014)** ''शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'', *सामाजिक शोध योजना, वाल्यूम–II, अंक–III, जुलाई (2014), पेज नं. 40–56*
12. **Bharti, A.K. (2010)** "Personality Adjustment of urban and Rural Adolescents of both the sexes", *Asian journal ofpsychology and education vol 43 No. 7-8 year 2010 Page 32-34*
13. **Sathe, V.U. and Anjsari, F. (2012)** "Study of academic achievement and selected adjustment factors of rural adolescent students in pune district", *Asian journal of psychology and education, vol45, No. 7-8 , year 2012, Page no. 23-32.*